LOVE-1

आजकल कलह का युग है, कलियुग है और देखा जाता है कि बाहरी दृष्टिकोण से भी सम्पन्न होने के बावजूद भी आजकल व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति तनावग्रस्त है, पारिवारिक रूप से तनावग्रस्त है, सामाजिक रूप से तनावग्रस्त है।

हम सब stress में रहते हैं individually, family wise, socially, हर प्रकार से stress में रहते हैं। और जब भी कोई बीमारी होती है उसके पीछे कोई न कोई कारण ज़रूर होता है- cause and effect... तो क्या कारण है कि stress इतना ज़्यादा बढ़ चुका है? क्या कारण है? Stress levels इतने ज़्यादा बढ़ चुके हैं कि बताया जाता है America में हर रोज़ एक हज़ार से भी ज़्यादा लोग suicide करने की कोशिश करते हैं। और High School के जो students हैं उनमें से ७० फीसदी बच्चे जो हैं seriously contemplate करते हैं suicide करने की, seriously... ७० per cent... ७० per cent is not a joke ! हर तीन में से दो व्यक्ति seriously suicide करने के बारे में सोचते हैं। और ऐसा नहीं है कि गरीब हैं, सुन्दर नही हैं, जवान नही हैं। जवान हैं, अमीर हैं, सुन्दर हैं, सब कुछ है परन्तु ऐसा कुछ है कि यह सब कुछ होने के बावजूद भी व्यक्ति suicide करने का सोचता है। इतना stress level बढ़ जाता है कि nervous breakdown हो जाता है, बिल्कुल collapse हो जाता है व्यक्ति, बिल्कुल सुध-बुध खो देता है।

Divorce..., divorce १९६० में लगभग सुना ही नहीं जाता था बिल्कुल भी। सिर्फ़ पिक्चरों में होता था divorce..., कुछ कोई theme बनाना होता था पिक्चरों में तो divorce शब्द इस्तेमाल किया जाता था। पहले यह होता ही नहीं था और १९७० में ही लगभग ७१ per cent के करीब पहले तीन साल में शादियाँ टूटनी शुरु हो गई थीं US में। और यह जो चीज़ें हैं अब ये भारत में भी काफ़ी हद तक आ चुकी हैं। तो कारण क्या है? ऐसा क्यों हो रहा है?

आज हम यह जानने की कोशिश करेंगे।

सामान्यतः सामान्य व्यक्ति खुशी को, आनन्द को कुछ चीज़ों से तुलना करता है। किन-किन चीजों से तुलना करते हैं हम आनन्द की? Happiness की? पैसा, success, fame..., इन सब चीज़ों से हम तुलना करते हैं happiness की। पर क्या यह happiness है? हम तुलना यही करते हैं कि यह सब चीज़ें जब भी हो जाएँगी तो हम खुश हो जाएँगे। पर क्या यह सब चीज़ें होने से हम खुश हो पाते हैं? तब भी stress levels इतने ज़्यादा रहते हैं, खाना नहीं पचता इतना ज़्यादा stress level रहता

है। छोटे-छोटे बच्चों में देखते हैं migraine की समस्या है आजकल। हर समय सिर दर्द है। तो क्या कारण है? ऐसा क्यों हो रहा है?

हम देखते हैं कि लोग जो बहुत famous भी हो जाते हैं तो हमें लगता है कि काश हम भी famous हो जाएँ। तो यह सब चीज़ें जिनके पास हैं अगर हम उनकी हालत देखें तो हम पाएँगे कि वे लोग भी..., they are also very lonely, बहुत अकेलापन है, बहुत खाली-पन है, बहुत खोखला-पन है जीवन में, बहुत खोखला-पन है। हर बात-बात में arguments, quarrel, क्रोध। क्यों होता है? व्यक्ति एकदम खोखला है, खोखली चीज़ को touch करेंगे ज़ोर की आवाज़ आएगी। और जो व्यक्ति ज्ञान से भरा हुआ है, भगवत् ज्ञान से उसको जो मर्ज़ी कर दो आवाज़ नहीं आएगी क्योंकि वह भरा हुआ है। हमारा जीवन एकदम खोखला है। छूता है कोई ज़रा सा, क्रोध आ जाता है।

एक व्यक्ति थे, वे US में बहुत अमीर व्यक्ति माने जाते थे। Business tycoon बोला जाता था, one of the business tycoons... तो उनका जो बच्चा था वह forest में गया था studies के अपने course को पूरा करने के लिए। तो वहीं पर जंगली पशुओं ने उसको मार दिया। तो उसके बाद उसके जो अमीर पिता से पूछा गया - "आपके पास कितना धन है।" पर वे कहते हैं - "पर मेरा बच्चा जा चुका है तो मैं किसी भी दिन मैं खुश नहीं हो सकता।" तो अगर हम सोचें कि धन से व्यक्ति खुश हो जाए तो धन से व्यक्ति खुश नहीं हो सकता।

एक बहुत बड़े Television के star थे, number one बहुत सालों तक। तो उनके पास एक बार हमारे एक भक्त थे वह lift लेकर जाना चाह रहे थे तो उनकी गाड़ी में बैठ गए थे। जब lift लेकर गए तो वह व्यक्ति रो रहा था अन्दर से। लाखों रुपए, करोड़ों रुपए हर हफ़्ते की कमाई और सुन्दर से सुन्दर स्त्री के साथ उनका उठना-बैठना, हर प्रकार से भौतिक रुप से सम्पन्न और वह कह रहा था कि, "मैं आपकी तरह बनना चाहता हूँ। आप कितने खुश हो।"

तो अगर हम देखेंगे वास्तव में किसी के पास जाकर देखेंगे तो हम पाएँगे कि व्यक्ति जो है अंदर से बहुत खोखला है और बहुत अकेला है। बहुत अकेला-पन है। यह जो loneliness है यह सबसे बड़ा disease बनता जा रहा है आजकल। सब कुछ है परन्तु मेरा कोई अपना नहीं है। न परिवार में कोई मेरा अपना है, न कोई व्यापार में मेरा कोई अपना है जिससे मैं share कर सकूँ, न मेरा कोई दोस्त है। तो कारण क्या है?

कई बार लोग बोलते हैं कि सबसे बड़ी समाज सेवा है भूखों को खाना खिलाना। क्या यही सबसे बड़ी समाज सेवा है? Food for thought... सोचिए इस बात पर! Food for thought... तो Food for thought यह है - 'क्या hunger of the belly is the only problem of the world...? Hunger of the belly...?' नहीं, not hunger of the belly! असली problem क्या है संसार की? 'Hunger of the Heart'... हृदय की भूख है।

किस चीज़ की भूख है हमें? पेट की भूख से संतुष्टि नहीं..., पेट को खाना दे दोगे, तब भी जिनके पास खाना है तो क्या वे लोग संतुष्ट हैं क्या? हृदय एकदम..., heart is hungry. Heart किस चीज़ के लिए hungry है? किस चीज़ के लिए? हाँ, हम अमीर बनना चाहते हैं, हम सोचते हैं अमीर बनकर हमारा search for happiness खत्म हो जाएगा। पैसे से, fame से तो हम पाते हैं कई जगह कि वह तो खत्म हो ही नहीं सकता उससे। सब कुछ होने के बाद भी कुछ missing है।

कई बार यह भी देखा जाता है कि पति-पत्नी की भी आपस में भी पटती है, जबकि बहुत मुश्किल होता है यह परन्तु कई बार यह भी होता है। बच्चे भी बात मानते हैं, धन भी होता है पर फिर भी ऐसा कुछ होता है कि जिसकी वजह से खोखला-पन, खाली-पन रहता है। सब कुछ है भौतिक दृष्टिकोण से और फिर भी खालीपन है। तो जो hunger of heart है, यह हृदय की यह जो भूख है, यह सबसे महत्वपूर्ण है। और यह कैसे संतुष्ट होगी?

हम चाहते हैं आनन्द। आनन्द कैसे प्राप्त हो सकता है? बताइए। हम Happiness चाहते हैं। कैसे प्राप्त होगा? Happiness का सबसे ultimate मतलब क्या है? क्या मतलब है Happiness का? कैसे रहेंगे हर समय खुश? क्या चाहिए आपको? वही तो बोल रहे हैं, बताइए क्या चाहिए आपको? कैसे रहेंगे?

देखिए, पूरा जीवन we are chasing after something..., यह तो पता चल जाए कि हम चाहते क्या हैं? कितनी हैरानगी की बात है। हर जीव पैदा होने से लेकर मरने तक यही एक ही चीज़ चाहता है। जैसे हमारा प्रसाद का होता है, food for life, यह तो food for life है, पर food for lives क्या है? इतने जीवन जा चुके हैं। Food for lives... तो वह क्या है food for life वास्तव में? हम क्या चाहते हैं? हम क्या चाहते हैं वास्तव में...?? "आनन्द"। आनन्द कैसे मिलेगा बताइए? What is the ultimate expression of happiness? क्या है ultimate expression of happiness? That is "LOVE".

"Love is the ultimate expression of Happiness"

आपके पास सब कुछ हो पर कोई व्यक्ति न हो जिसके साथ आप share कर सको तो क्या आप खुश रहोगे? अन्दर से सोच रहे होंगे, रह सकते हैं, पर थोड़ी देर के लिए सोचिए, दिल्ली में कोई भी नहीं है सिर्फ़ आप एक ही हो और सब चीज़ के मालिक आप हो। सारी buildings हैं, सब खाना-पीना, hotel, सब कुछ है park, बागान, सब कुछ है, तो क्या खुश रहेंगे हम क्या? कोई चाहिए जिसके साथ हम share कर सकें।

हम वास्तव में क्या चाहते हैं?? Happiness! और क्या मतलब है happiness का?? Love.

Love is the ultimate expression of happiness…
We want to love and we want to be loved…

हम चाहते हैं कि कोई हमें प्यार करे और हम किसी को प्यार करें। यह है वास्तविक बीमारी। जब तक बीमारी जानेंगे ही नहीं तो ठीक कैसे करेंगे? अभी तो हम बीमारी से भाग रहे हैं। हमें पता ही नहीं है क्या है, बस भागे जा रहे हैं।

कोई बन जाता है workaholic…, कि बस मैं जानना ही नहीं चाहता मैं क्या चाहता हूँ। इतना दुःखी हूँ तो कैसे absorb करूँ दुःखों को? Busy रह कर। कोई व्यक्ति क्या करता हैं drugs के अन्दर चला जाता है कि मैं अपना सारा दुःख जो है गम, drugs में पीकर खत्म करूँ। कोई alcoholic बन जाते हैं, शराब पीकर अपना गम भुलाना चाहते हैं। पर जानें तो सही कि हम क्या चाहते हैं, वास्तव में क्या हमारी requirement क्या है?

You all have a very strong loving propensity and it has to be fulfilled somehow… जब तक यह loving propensity हमारी परिपूर्ण नहीं होगी तब तक हम कभी भी खुश नहीं रह सकते। कोई भी व्यक्ति खुश नहीं रह सकता, जब तक यह loving propensity fulfill नहीं होगी। और जब तक हम यह जानेंगे नहीं कि how we should develop deep relationships…, तब तक हम सब बाहरी तौर से सफ़ल हो सकते हैं, पर बिल्कुल दुःखी के दुःखी रहेंगे। बिल्कुल दुःखी, अगर हम deep relationships cultivate नहीं कर सकते। आजकल हम देखते हैं बेटा-बेटी की माँ-बाप से नहीं पटती, पति का पत्नी से नहीं, भाई का भाई से नहीं, भाई का बहन से नहीं, बहन का बहन से नहीं, deep relationship नहीं। और मंदिर में भी अगर हम आ जाते हैं तो भी हम deep relationships cultivate नहीं करते इसलिए दुःखी रहते हैं। चाहे मंदिर के

अन्दर हो या मंदिर के बाहर, भेद नहीं है, loving propensity को तो पूरा करना ही होगा। जब तक नहीं होगी तब तक दुःखी रहेंगे। कोई उपाय नहीं है इसका।

This is the propensity and it has to be fulfilled...

और हम किन चीज़ों से पूरी करने की कोशिश करते हैं? पैसे से। पैसों से सम्बन्ध खरीदोगे क्या? पैसों से किसी को बोल सकते हो मुझे प्यार करो तुम। नहीं। Loving propensity है तो इसको lust से पूरा करना चाहते हैं यानि की sex से। हाँ, तो वह loving propensity पूरी नहीं होगी। You can maximum fulfill your desires but you cannot fulfill your loving propensity by these things.

इच्छा की पूर्ति भले कर सकते हो वह भी शायद और वह भी कुछ हद तक पर loving propensity वह ऐसे पूरी नहीं होती।

जो आत्मा है, Soul is longing for only one thing, only one thing... 'Soul', myself, i am longing for only one thing, that is LOVE... Can there be anything greater than Love? Can there be any satisfaction greater than Love? No!

हम देखते हैं पिक्चरों में भी, जो मुख्यतः जो theme होता है, वह क्या होता है? LOVE... गाने देखते हैं इतने सारे, क्या theme होता है? Love... क्यों? क्योंकि सबको love चाहिए। परन्तु होता क्या है, कि जैसे समाज में भी और पिक्चरों में भी, एक युवक और एक युवती मिलते हैं, उससे क्या होता है? उससे initial attraction होता है, infatuation होता है जिसको हम love मान बैठते हैं। उसके बाद क्या होता है? उसके बाद विवाह हो जाता है। उसके बाद, West में तो ज़्यादातर एक ही चीज़ होती है, Divorce... और भारत में क्योंकि social pressures बहुत ज़्यादा होते हैं बच्चों की वजह से, सामाजिक रूप से pressure बहुत होते हैं, तो पति-पत्नी एक दूसरे को बस tolerate ही करते रहते हैं जीवन भर।

हमारा जीवन क्या एक दूसरे को झेलने के लिए मिला है? बच्चे माँ-बाप को झेल रहे हैं, माँ-बाप बच्चों को झेल रहे हैं और पति पत्नी को झेल रहा है और पत्नी पति को झेल रही है। मैं कितनी बारी देखता हूँ, शक्ल नहीं देखना चाहते अपने पति की और पति का होता है, मैं इसकी शक्ल नहीं देखना चाहता हूँ। पर फिर भी साथ में रहते हैं क्योंकि tolerate करना है, सामाजिक pressure की वजह से। तो क्या यही प्राप्ति चाहते हैं क्या हम? और ऐसा हम लोगों के कितनों के जीवन में ऐसा हो रहा है। तो कैसे हम संतुष्ट होंगे?

Soul is looking for something else. Soul is looking for what? ECSTACY, LOVE. This is what soul is looking for... precisely! क्यों? इसलिए..., क्योंकि हम भगवान् के अंश हैं। *ममैवांशो,* भगवान् के अंश हैं। भगवान् क्या ढूंढ़ने में लगे रहते हैं हमेशा? ECSTACY, LOVE. भगवान् कैसे fulfill होते हैं? Loving Relationships जब होती हैं। सबसे ज़्यादा तुष्ट कब होते हैं कृष्ण? हाँ, सम्बन्धों से होते हैं, पर सखाओं के साथ रहकर संतुष्ट पूर्ण रूप से नहीं होते, न यशोदा के साथ रहकर होते हैं, पर गोपीजनों के साथ। तो loving propensity कृष्ण में भी है और क्योंकि हम कृष्ण के अंश हैं, इसलिए loving propensity हममें भी है। और loving propensity जब तक तुष्ट नहीं होगी, तब तक हम रुष्ट ही रहेंगे, दुःखी रहेंगे, परेशान रहेंगे। भगवान् के अंश हैं हम लोग इसलिए हम सब के अन्दर loving propensity है।

We are not meant for greed, we are meant for Love...

पूरा जीवन इस greed को पूरा करने में लगा देते हैं। Greed का मतलब पैसा नहीं है केवल, पैसे का लोभ, sex का लोभ होता है, इसको greed कहा जाता है। Fame की इच्छा, इसको greed कहा जाता है। We are not meant for these things. We are not meant for greed. We are..., soul is meant to love and to be loved... यह हमारा सारा सार है जीवन का। सब कुछ कर रहे हैं, ज्ञान है, सब कुछ है पर सम्बन्ध नहीं हैं।

तो बड़े-बड़े नेताओं को आध्यात्मिक रूप से भी जो बड़े-बड़े leaders हैं, पाया जाता है, "i felt very lonely at the top." बड़े-बड़े महान् संतो के साथ भी पाया जाता है, वैष्णव संतो के साथ भी। तो अभी से हमें अपना base ठीक करना पड़ेगा। हरिनाम भी ले रहे हैं, दुःखी भी हैं, तो सही कार्य नहीं कर रहे हम लोग।

मुख्यतः कारण क्या होता है? तनाव का कारण मुख्यतः क्या होता है? हमारा अड़ियलपन। यह हमारा मुख्यतः कारण है तनाव का। देखिए अगर हम चाहते हैं कि कोई हमें प्रेम करे या हम किसी को प्रेम करें, तो यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि 'मैं आत्मा हूँ।' जब तक यह बात नहीं मानेंगे, तब तक प्रेम करना या प्रेम कोई किसी को करे, यह हो ही नहीं सकता। संभव ही नहीं है। असंभव है यह। तो तनाव का कारण क्या है? कि हम मानते ही नहीं हैं कि मैं आत्मा हूँ। अड़ियलपन, ज़िद्दीपन, अहंकार, महत्वाकांक्षाएँ- ये सब जो हैं, ये कारण हैं वास्तव में तनाव के हमारे। मानते नहीं हैं हम कि मेरे ego संतुष्टि में मेरी संतुष्टि नहीं होगी। हम मानते हैं कि ego की संतुष्टि

से मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। कैसे? आपकी भौतिक इच्छा पूरी हुई पर प्रेम चाहता कौन है? "आत्मा"।

कई बार बोलते हैं कि 'I love you'... 'I love you' कैसे बोल सकता है कोई व्यक्ति? कैसे बोल सकता है जब तक आपको जानता ही नहीं है वह व्यक्ति। 'I love you' बोलने के लिए तो आध्यात्मिक स्तर पर आना पड़ेगा। 'You' कौन है? 'You' कौन है? आत्मा। 'I' कौन है? आत्मा। तो आत्मा दूसरे आत्मा के लिए बोल सकता है, 'I love you'. परन्तु क्या इस दृष्टिकोण से कोई बोलता है? नहीं। तो झूठ बोल रहे हैं सारे व्यक्ति। 'I love you...' 'You' तो आत्मा है और 'I' भी आत्मा है और जबकि हम आत्मा के स्तर पर कोई बात करते ही नही हैं। और हम मान बैठते हैं कि, "मेरा पति तो मुझे प्यार करता है।" या "मेरी बेटी, इसको तो मैं प्यार करती हूँ।" ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं हो सकता।

सोचने की बात है, जो व्यक्ति आपके बारे में कभी सोचता ही नहीं है, क्या वह आपको प्यार कर सकता है कभी? जिसने आपके बारे में कभी भूतकाल में नहीं सोचा, वर्तमान में नहीं सोच रहा और भविष्य में भी उम्मीद नहीं है कि सोचेगा, क्या वह व्यक्ति आपको प्यार कर सकता है? पति-पत्नी तो एक दूसरे को यही बोलते हैं, बच्चे माँ-बाप को यही बोलते हैं, "हम तुम्हें प्यार करते हैं।" झूठ बोलते हैं सब के सब। जिसने कभी आपके बारे में कुछ सोचा ही नहीं वह आपको प्यार कैसे कर सकता है? जिसने आपके बारे में कभी चिन्तन ही नहीं किया।

तो प्यार कैसे पूरा होता है? कैसे कर सकते हैं?

कई संत लोग कहते हैं कि- "If one who is not happy within then one can never become happy in any circumstance..." जब तक कोई अन्दर से खुश नहीं है, बाहर के किसी circumstances से उसे खुशी नहीं मिल सकती। तो हम यह देख सकते हैं कि हम अंदर से कितने खुश हैं। कितने स्थित हैं इस ज्ञान में कि मैं ब्रह्म हूँ, मैं आत्मा हूँ। कितने स्थित हैं इस बात में हम?

One is not happy within, he can never become happy in any circumstance. One who is happy within, वह कहीं पर भी जाएगा, शाहों का शाह, राजाओं का राजा। राजा मतलब उसे कहीं पर भी माँगना नहीं पड़ता। उसे तीनों लोकों में कोई चीज़ आकर्षित नहीं कर सकती..., one who is happy within. And one who is not happy

within, no matter what he does, he is going to be miserable, life is going to be miserable. तो प्रेम कैसे किया जाए? कैसे हम लोग खुश होंगे?

हमारा प्रेम का क्या concept है? 'लेना-लेना-लेना', कैसे इसको exploit कर दूँ - यह हमारा प्रेम का concept है। हम सोचते हैं कि हम संतुष्ट होंगे 'लेकर', लेना-लेना, इज़्ज़त लेना, शरीर लेना, मान लेना, इससे हम संतुष्ट होंगे। "मैं आत्मा संतुष्ट होऊँगा 'लेकर'।" जबकि आत्मा का मतलब है सेवक, सेवक का क्या मतलब होता है? 'देना-देना'। हम अपने स्वरूप के ठीक विपरीत चलते हैं, 'लेना-लेना' करके। आत्मा तो 'देकर' संतुष्ट होता है, 'लेकर' नहीं संतुष्ट होता। 'लेकर' कभी संतुष्ट नहीं हो सकता।

हम सोचते हैं love का मतलब gaining, जबकि love का मतलब होता है, giving. Gaining..., कैसे ले लूँ, निचोड़ लूँ, पति को, पत्नी को, बच्चों को, दोस्त को। आजकल तो गुरु को भी लोग निचोड़ लेते हैं। कैसे निचोड़ लिया जाए? आत्मा संतुष्ट होती है 'देकर'। Giving, not gaining... अगर हम giving नहीं करेंगे तो हमारे जीवन में कभी भी gaining नहीं होगा। 'देकर' मिलेगा।

कई लोग कहते हैं न कि, "मुझे कोई प्यार नहीं करता, मुझे बिल्कुल प्रेम नहीं मिल रहा"। प्रेम आपको मिल नहीं रहा इसका मतलब है कि आप किसी को प्रेम नहीं कर रहे। As you sow, so shall you reap... अगर आप दोगे जो चीज़, वही चीज़ आपको मिलेगी interest के साथ। जो दोगे। आपको प्रेम नहीं मिल रहा, बड़ी स्पष्ट बात है कि आप किसी को प्रेम नहीं कर रहे। कहते हैं, "मेरी कोई respect नहीं करता", respect इसलिए नहीं करता क्योंकि आप किसी को कोई respect नहीं दे रहे। आप respect देना शुरु करो, वही चीज़ आपके पास आएगी।

आँखें बंद करके सच्चे हृदय से सोचिए, ऐसा क्या कोई भी व्यक्ति है जिसको मैं प्रेम करता हूँ, या करती हूँ? कोई भी है क्या? कोई एक भी है क्या? जिसे वास्तव में मैं देना चाहता हूँ या देना चाहती हूँ, हर समय। मन से, वचन से, शरीर से। अगर सच्चाई से बोलेंगे, तो ज़्यादातर लोग पाएँगे कि एक भी व्यक्ति नहीं है हमारे जीवन में जिसको हम serve करना चाहते हों, सब से लेना चाहते हैं, सबसे। एक व्यक्ति नहीं है जिसको हम serve करना चाहते हों, इतने महा-स्वार्थी हैं हम। तो महा-स्वार्थी व्यक्ति कैसे खुश होगा, बताइए? स्वार्थी मतलब selfish..., selfish, स्वार्थी। Selfish मतलब जिसका इष्ट जो है self होता है। इष्ट..., इष्टदेव होता है इष्टदेव। इष्टदेव

जिसका self होता है, उसे selfish कहा जाता है। कृष्ण को संतुष्ट न करके, स्वयं को संतुष्टि करने में जो व्यक्ति लगा रहेगा, वह कैसे खुश हो सकता है? Selfish व्यक्ति, असंभव।

आत्मा मतलब 'देना', 'सेवक'। सेवक सेवा करता रहता है। उसकी सेवा करने में ही खुशी होती है। हम सोचते हैं, 'हम ले रहे हैं।' ले तो आप तब भी नहीं रहे। दास तो हो ही या तो इन्द्रियों के या भगवान् के और भक्तों के। तीसरा तो alternative ही कोई नहीं है। या भगवान् के, उनके भक्तों के दास या इन्द्रियों के दास। Giving...service तो कर ही रहे हैं, यह depend करता है कि किसकी कर रहे हैं?

और हम लोग यही सोचते रहते हैं, मानते रहते हैं कि आज नहीं तो कल हमारे घर में ठीक हो जाएगा सब कुछ। सोचते हैं न? मेरी मम्मी मेरे साथ एक दिन ठीक तरीके से बात करेंगी, मेरे पापा मुझसे ठीक..., ऐसा दिन कभी भी नहीं आएगा। कारण क्या है? कारण बड़ा स्पष्ट है कि सारे जीव इस संसार में क्यों आए हैं? अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए आए हैं, उनकी इच्छाएँ पूरी नहीं हुई थी तो इसलिए वे आए हैं। आप किसलिए आए हो? आप भी इसलिए आए हो। तो बस सब अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगे हुए हैं। तो कैसे एक दूसरे की सेवा करने का सोचेंगे कभी? बताइए, clear होना चाहिए न कभी धोखे में नहीं रहना चाहिए। कभी भी नहीं मिलेगा। कोई प्रेम नहीं करेगा सांसारिक व्यक्ति।

न संसारिक व्यक्ति को कोई प्रेम कर सकता है, न संसारिक व्यक्ति किसी को प्रेम कर सकता है। प्रेम तो केवल भक्त कर सकता है और भक्त को किया जा सकता है। कैसे? वह ऐसे क्योंकि भक्त एक समान है। वह एक ही चीज़ चाहता है हमेशा। तो हम जब भी सही हो जाएँगे तो हम उससे प्रेम कर सकते हैं और वह सबको प्रेम करता है और हम उसको प्रेम कर सकते हैं। पर जो संसारिक व्यक्ति है, क्या समस्या है ऐसे व्यक्ति के साथ? कि वह तो तीन गुणों में है। कभी तो उसकी सात्विक इच्छाएँ हो जाती हैं, सात्विक पूर्ति करने की कोशिश करो तो राजसिक शुरु हो जाती हैं। राजसिक करो तो रात को पशु बन जाते हैं। तो फिर कौन-कौन सी इच्छाओं को कब तक पूर्ति करते रहेंगे? वह तो गुणों में लिप्त है, एक पूरा करो, गुण बदल जाते हैं। फिर अलग इच्छाएँ उसी प्रकार से होती रहती हैं।

जो भक्त हैं वास्तव में केवल उन्हीं को प्रेम किया जा सकता है, because they don't change. संसारिक व्यक्ति keeps on changing... गन्दे से गन्दा, थोड़ा सा अच्छा, थोड़ा ज़्यादा गंदा, बस यही..., है negative के अन्दर ही सारी चीज़ें।

आजकल क्या होता है कि घरों में इतना तनाव है। बच्चों की माँ-बाप से नहीं हो पाता अच्छी तरह, पति-पत्नी का... तो फिर क्या करते हैं? विवाहित पति-पत्नी भी होते हैं तो वे बाहर इधर-उधर देखते हैं और जो बच्चे भी होते हैं teenagers..., वे भी बाहर boyfriend/girlfriend बनाने के लिए सम्बन्ध ढूंढ़ते हैं। क्यों? संतुष्टि घर में नहीं मिल रही। तो सोचते हैं बाहर मिल जाएगी। मतलब एक गड्ढे में नहीं गिरना चाहते, दूसरे गड्ढे में गिरना चाहते हैं। यह clear है। Change नहीं करना चाहते आपने आप को। आप समझ रहे हैं?

यह बात सब समझते हैं कि संसार के अन्दर पारिवारिक इतनी समस्याएँ हैं। आजकल इतना तनाव है कि हर कोई उपाय ढूंढ़ रहा है कि कोई और उपाय मिल जाए जिससे मैं खुश हो सकूँ, मेरे किसी से सम्बन्ध बन सकें। तो सम्बन्ध सही जगह बनाने की बजाय वह फिर से किसी सांसारिक स्त्री या पुरुष से ही बनाना चाहता है। तो समझ आना चाहिए कि I love you कभी भी नहीं होगा इस संसार में, जितनी मर्ज़ी कोशिश कर लो, संभव ही नहीं है। Don't try for the impossible! यह होना ही नहीं है we are trying for the impossible.

कहा जाता है कि love is blind but marriage is an eye opener... पता चल जाता है कुछ ही समय बाद। हमारे घर के पास एक व्यक्ति हैं उसका सात साल affair चला था, शादी हुई और divorce होने में, टूटने में पाँच दिन लगे थे सिर्फ़। पाँच दिन बाद अलग हो गए थे, सात साल का प्यार था। तो इसका उपाय क्या है फिर? इसका उपाय क्या है? इसका उपाय है - केवल गुरु। अब हम हैरान हो गए होंगे हम तो प्रेम, ecstacy की बातें कर रहे थे गुरुजी कहाँ से आ गए बीच में। हाँ, गुरुजी का आना बहुत ज़रुरी है। क्यों?

ONE GOAL, ONE GURU, ONE VISION.

कैसे? कि नदी के अन्दर हम पत्थर डालें तो उसमें ripples, circles create होते हैं। क्योंकि conflicting नहीं है तो, एक ही center है तो कोई conflict नहीं होता। उसी प्रकार से अगर कृष्ण center होंगे जीवन में तो conflict नहीं होना चाहिए। तो हमारे जीवन में भी, हम तो भक्त हैं देखा जाए तो सब लोग कहते होंगे आपके तो कृष्ण

center हैं जीवन के। हम पति-पत्नी के भी हैं और मंदिर के आश्रमों के भक्तों के भी कृष्ण center हैं, देखा जाए तो। पर कितना तनाव है? भक्तों में आपस में तनाव है, मंदिर के अन्दर, मंदिर के बाहर भी तनाव है। कृष्ण तो center में लग रहे हैं। मैंने इसलिए बोला है कृष्ण center में होना solution नहीं है केवल। ONE GOAL, ONE GURU, ONE VISION.

पहले क्या होता था कि जो घर के मुखिया होते थे पुरुष वह भक्ति ढंग से करते थे seriously..., तो पत्नी अगर उनको केवल assist करती रहेंगी तो भी वह भगवद्धाम जा सकती हैं। पर न तो आजकल ऐसे पति हैं, न आजकल ऐसी कोई पत्नी है। सभी में ego बहुत ज़्यादा है और weakness भी बहुत ज़्यादा है। तो solution क्या है? कि संतो को जब समस्या हो तो कम से कम ऐसा एक व्यक्ति तो हो जिसकी बात दोनों मानेंगे। तो उस व्यक्ति की बात मानेंगे तो ही हमारे जीवन में शान्ति आ सकती है। अन्यथा चाहे माला पकड़ें, चाहे दीक्षा हो जाए मंदिर के अंदर चाहे मंदिर के बाहर जब तक गुरु नहीं हैं, एक VISION नहीं है, तब तक संतुष्टि नहीं होगी। कभी loving relationships नहीं हो पाएँगे। कभी भी नहीं हो पाएँगे। यह असंभव है। सब अपने निजी जीवन में देख सकते हैं। केवल एक solution यही है।

कई बार बोलते हैं कि, "मैं अपने बेटे को प्यार करता हूँ, यह तो सच है। चाहे कुछ भी लिखा हो शास्त्रों में, मैं तो करता हूँ।" मुझे बताओ कैसे करते हो आप बेटे को प्यार? सिद्ध करो कि आप अपने बेटे को प्यार करते हो। मैं आपको अभी सारी चीज़ें सिद्ध करता हूँ आप किस को प्यार करते हो। बेटे को प्यार करते हो? मान लो यह हैं पिताजी, यह इनका बेटा है, यह बोले मैं इनको प्यार करता हूँ। यही बोल सकते हैं न, हद से हद क्योंकि इनकी needs को पूरा करता हूँ, सब कुछ लेकर देता हूँ। मान लो इनके बेटे यह नहीं होते, यह हो जाते, तो क्या कुछ भेद होता? कुछ भेद होता क्या? तब इनको प्यार कर लेते। यह नहीं होते तो यह हो जाते, तो इनको प्यार कर लेते। तो वास्तव में हम केवल अपने अहम् को प्यार करते हैं। "मेरा बेटा", इसलिए मैं उसको प्यार करता हूँ।

आपको और उदाहरण देते हैं जैसे कई बार बोला जाता है, बड़ा महान् माना जाता है उस व्यक्ति को कि, I love my city, I love my country, I love my school... इसका मतलब क्या है? आप अपने स्कूल को प्यार करते हो। Modern School में आप थे, तो Modern School को प्यार करते हो, ऐसा देखने में प्रतीत हो रहा है कि वास्तव में वह Modern School को प्यार करता है। पर मान लीजिए वे Modern में नहीं थे,

DPS में होते तो क्या होता? वे DPS को प्यार कर लेते। DPS में नहीं होते, Army Public में होते तो Army Public को करते। जिसका connection मुझ से है वह चीज़ मुझे प्रिय हैं। इसका यह मतलब है। कोई किसी को प्यार नहीं करता।

"मैं मेरी पत्नी को प्यार करता हूँ।" कोई बोले। अच्छा आप अपनी पत्नी को प्यार करते हो? अगर ऐश्वर्या राय आपकी पत्नी होती तो उसको नहीं करते आप प्यार? उसको करते आप प्यार फिर। आपको तो बस जो आपसे जुड़ा हुआ है बस, अपने अहम् की तुष्टि करनी है आपने। We are not meant for greed, we are meant for love! यह गलतफ़हमी में मत रहिएगा, कोई भी आपको बोलता हो, पति-पत्नी, बेटा-बेटी, बाप कोई भी, सब झूठ बोल रहे हैं। सब झूठे, अहंकारी, महत्वाकांक्षी हैं सब। किसी को पता ही नहीं, 'I' क्या है? किसी को पता ही नहीं, 'LOVE' क्या है? वह प्यार क्या करेगा किसी को? खुद ही बदलता रहता है। Modes इतने heavy हैं उस व्यक्ति के ऊपर।

जो खुशी जो चेहरे पर होती है भक्त के, वह चाहे कोई भी व्यक्ति, संसारिक व्यक्ति कोशिश कर ले वह beauty parlour में जाकर अपने चहरे पर smile नहीं ला सकता वह। जितना मर्ज़ी चला जाए कोई भी व्यक्ति। जो भक्त के चेहरे पर smile है, उसको copy करना सम्भव नहीं है। हम वह चाहते हैं वास्तव में। वह। वह चाहते हैं हम वह smile..., वह genuine smile..., वह तीनों गुणों से परे वाला smile. It cannot be duplicated. One who is not happy within, he can never be happy किसी भी तरीके से।

तो प्रेम और शान्ति हम चाहते हैं। यह है कहाँ पर अब फिर? Ultimately तो यही चाहते हैं प्रेम और शान्ति, यही चाहते हैं न जीवन में? सब कुछ है, शान्ति नहीं है, सब कुछ है पर कोई मुझे प्यार नहीं करता। प्रेम और शान्ति चाहते हैं। कोई किसी को love नहीं करता। तो सही तरीके से उसे outlet देना है, loving propensity को सही जगह utilize करना है, हम गलत जगह कर रहे हैं utilize.

धन कमाना चाहते हैं, धन कमाकर क्या होगा? जिसके पास है उसकी शक्ल तो देखो, अपनी शक्ल देख लो। इतना धन कमाकर अभी तक आपकी क्या हालत है? कोई व्यक्ति सोचे, 'प्रचार करके मैं खुश हो जाऊँगा।' इतना तो कर चुके हो, देखो तो सही क्या हालत है आपकी अंदर से। Loving Relationships नहीं हो रहे न? हाँ, तो कुछ नहीं हो रहा। दुःखी रहेंगे। बाहर को जीत गए अन्दर से हार गए। खोखले के खोखले

एकदम, बिल्कुल खोखले। कितना आवाज़ करता है व्यक्ति, जो खोखला व्यक्ति होता है। अंदर कुछ नहीं है।

अगर कोई बोले कि, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" तो क्या समझना चाहिए? झूठ बोल रहा है। Doubt नहीं होना चाहिए। झूठ बोल रही है और झूठ बोल रहा है। दोनों। क्योंकि आपके शब्द कुछ और बोल रहे हैं और आपका चेहरा कुछ और बोल रहा है। आपका चेहरा lust से भरा हुआ है और आपके शब्द बोल रहे हैं love है इसमें, नहीं। शब्द और चेहरा एक होगा, तो love होगा। हमारे शब्द अलग हैं, चेहरा अलग है।

कोई बोलता है, I love you, तो इसका एक ही मतलब है- 'His Happiness is dependent upon your co-operating with that person...' That's all. His happiness is dependent on you. That's all... Love कुछ नहीं है। बस वह अपने सुख के लिए आप पर निर्भर है इसका यही मतलब है। अरे! प्रेम करने के लिए व्यक्ति को normal तो होना पड़ेगा न कम से कम। यह तो requisite होना ही चाहिए न, कि व्यक्ति normal है। व्यक्ति पूरा पागल हो वह प्यार क्या करेगा, बताइए। पूरा पागल। पागल व्यक्ति क्या प्यार करेगा किसी को और पागल व्यक्ति को कोई क्या प्यार करेगा।

जो व्यक्ति यही नहीं समझ पा रहा ढंग से, "मैं आत्मा हूँ", वह तो पागल है पूरा। और पागल व्यक्ति किसी को क्या प्यार कर सकता है। कोई आगरे के पागलखाने से आकर बोले कि, 'मैं आपको प्यार करता हूँ।' मानोगे उसकी बात को? 'पागल है यह।' सारे यही हैं, आगरे वाले ही हैं सब। सभी पागल हैं पूरे। वास्तविक संतो को छोड़कर।

अगर हम वास्तव में चाहते हैं कि हम किसी को प्यार करें और कोई हमें प्यार करे तो इस बात को मनन करना पड़ेगा, बारम्बार, निरन्तर, "मैं आत्मा हूँ", मनन करना पड़ेगा। चाहे हम lecture दे रहे हों, कुछ भी कर रहे हों, मनन नहीं करेंगे, संतुष्ट कभी नहीं रहेंगे। बहुत मनन करना पड़ेगा क्योंकि मनन नहीं करेंगे तो विस्मरण हो जाएगा। किस बात का? कि "मैं आत्मा हूँ"। विस्मरण होगा तो वही शरीर की पुष्टि बस। Lust !

एक बार एक राजा था, उसने बोला रानी को..., रानी को नहीं एक युवती थीं राजकुमारी- "मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।" उसका नाम था अजैतशेली, ऐसे कुछ नाम था। उसने बोला; यह घटना शास्त्रों में है- "मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" "प्यार करते हो दो हफ़्ते बाद आ जाना।" वह दो हफ़्ते बाद आया। युवती ने जान बूझकर

अपने आप को बहुत ही कमज़ोर बना दिया था। तो कमज़ोर बना लिया तो उसने बोला, वह आया कि, "तुम वही हो?" कहा- "हाँ।" "मैं तुमसे शादी नहीं करना चाहता।" तो राजकुमारी ने बोला, "किससे प्यार करते थे तुम? चमड़ी से? कसाई घर में जाओ जितना प्यार करना है कर लो, कसाई घर में जाकर।"

हमारा सबका भी यही हाल है कितना झूठ बोलते हैं हम कि प्यार करते हैं। कितना झूठ बोलते हैं। चमड़े से प्यार करते हैं और बोलते हैं- I love you...

न 'I' का पता है, न 'You' का पता है।

कोई पिता अपने बच्चों को प्यार नहीं करता, कोई भाई अपनी बहन को प्यार नहीं करता, कोई दोस्त एक दूसरे को वास्तव में कोई प्यार नहीं करता। जब तक "कृष्ण" center में नहीं होंगे और practically कलह के इस युग में जब तक "गुरु" center में नहीं होंगे, सम्भव ही नहीं है कोई भी प्यार कर सके, शान्ति भी रह सके। हमारी महत्वाकांक्षाएँ हमें ले डूबेंगी।

हम सब enjoy करना चाहते हैं। सब Supreme Enjoyer बनना चाहते हैं, है न? हम सब कृष्ण बनना चाहते हैं। फिर से सिद्ध होता है इस बात से। प्रभुत्व जमाना, कृष्ण बनना चाहते हैं। We all want to become Kṛṣṇas... पर reality क्या है? We are Kṛṣṇa's... Comma जो है S से पहले है ('S) असली में। पर हमने comma 'S' के बाद लगा दिया है (S')। We are all Kṛṣṇas - tiny tiny Kṛṣṇas. No, we are Kṛṣṇa's, we all belong to Kṛṣṇa. We are not Supreme Enjoyer. We are all dependent enjoyers. *"यस्मिन् तुष्टे जगत् तुष्टम्"*, वे तुष्ट होंगे तब हम तुष्ट होंगे।

This is a place of no love. यह कोई प्रेम का स्थान ही नहीं है। Everybody here is simply to ruin us... सब हमें बर्बाद करने में लगे हुए हैं। Everyone here is to ruin us... सारे के सारे लोग। माँ अपने तरीके से exploit करना चाहती है, पति अपने तरीके से exploit करना चाहता है, बच्चे अपने तरीके से exploit करना चाहते हैं, तथाकथित दोस्त अपने तरीके से exploit, सास-ससुर वे अलग तरीके से exploit करना चाहते हैं। This is a place of no love. Everyone is here just exploiting. जब exploit ही व्यक्ति होता रहेगा वह कैसे खुश रह सकता है?

जब हम गुरु के, भगवान् के संग में रहते हैं तो हम blossom होते हैं, न कि exploit होते हैं। Then we blossom, then we become happy... जब तक वह कली खिलेगी

ही नहीं तो फूल नहीं बन पाएगी। जब तक पूरी तरह blossom नहीं करेगा तो कभी खुशबू नहीं आएगी, कभी आनन्द नहीं आएगा जीवन में। हमेशा कली, और वह भी दब-दबकर exploit होकर, बिल्कुल कचरा हो जाएगी। यही हो रहा है आजकल। हर कोई exploit करने में लगा है। इससे यह निकाल लो, इससे वह निकाल लो। बस यह। कोई नहीं सोच रहा इसको मैं serve कैसे कर दूँ। इसको ऐसे..., कोई नहीं सोच रहा इसलिए कोई खुश नहीं है। जो व्यक्ति खुश होता है उसकी शक्ल बिल्कुल अलग होती है। बिल्कुल अलग शक्ल होती है। देना-देना करने के बाद सब बदल जाता है।

चार "गुरु" होते हैं जिनके संरक्षण में रहकर वहाँ पर भी कार्य करते हैं। चार प्रमुख "गुरु" होते हैं। यहाँ पर अगर हम किसी का शासन स्वीकार नहीं करेंगे, तो आध्यात्मिक जगत् में कैसे प्रवेश हो पाएगा? और शासन भी केवल अपनी blossoming के लिए, स्वयं की उन्नति के लिए। देखिए इससे पता चलेगा कि अगर हम किसी से कुछ नहीं चाहते तब भी केवल खुश रह सकते हैं। कैसे? When there is humility, there is no expectation. जब व्यक्ति विनम्र होता है तो किसी प्रकार की आशा नहीं रखता किसी से।

When there is humility there is no expectation and when there is no expectation क्या होता है केवल? Only gratitude. जो मिल रहा है उसके लिए बस gratitude ही gratitude है, भगवान् की बहुत कृपा है। Gratitude हमेशा। Expectations किस वजह से होती है? Arrogance की वजह से। Arrogance leads to expectations... तो humility नहीं है तो expectations होंगी ही होंगी। आशाएँ, आशाएँ हमेशा रहेंगी।

अनपेक्षा मतलब, तभी humility आएगी। Humility वह द्वार है जिससे हम भगवदीय राज्य में प्रवेश करेंगे। और humility तभी आएगी जब हमें किसी से कुछ नहीं चाहिए होगा तब humble हो पाएँगे। जब हमें किसी से कुछ चाहिए तो arrogance है। 'मुझे चाहिए' - 'मुझे इज़्ज़त चाहिए, मुझे नाम चाहिए, मुझे sex चाहिए, मुझे पैसा चाहिए।' तो कहाँ से humility आएगी? इतना arrogance है। 'मुझे यह करना है। दिखाकर रहना चाहता हूँ सबको, इसको मैं संतुष्ट कर सकता हूँ।' आप ख़ाक संतुष्ट करोगे किसी को।

"अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।"

(गीता-१२.१६)

"बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।"

(गीता-२.५०)

यह योग की वास्तविक क्रिया है - *अनपेक्षः*। तभी वास्तव में विनम्रता आएगी। जब तक कुछ भी चाहेंगे कभी विन्रमता नहीं आ सकती। हमें मानना पड़ेगा कि मैं आत्मा हूँ और आत्मा मतलब 'देना-देना और देना।' Service, service और service... इससे संतुष्टि मिलती है।

We are longing only for Love, only for Loving Relationships. Only Loving Relationships! यही हम सबको चाहिए। और यही न होने की वजह से ही stress है सब जगह।

एक और बात कि जब यह सोचते हैं, 'कोई मुझे प्यार नहीं करता।' यह बात तो समझ आती है, हाँ। यह भी अच्छी तरह समझ लीजिए, हम भी किसी को प्यार नहीं करते। अपने आप को कहीं innocent soul मत समझ लीजिएगा। हम भी उतने ही घटिया हैं, जितना कोई दूसरा व्यक्ति है। हाँ, हम भी नहीं करते हम भी महा-स्वार्थी हैं। अभी excerise किया था न, किसको करते हैं प्यार वास्तव में। किसी को भी नहीं। किसके लिए अपनी जान देना चाहते हैं हम? कोई एक तो हो।

अगर हम कृष्ण को प्रेम करेंगे तो क्या होगा?? जब हमको भगवत् प्रेम प्राप्त होगा तो क्या हो जाएगा?? We will love Kṛṣṇa... Kṛṣṇa will love us... And then because of our love for Kṛṣṇa we will love every living entity. We will love every living entity. This is a secret... कई बार यह भी हो सकता है कि, हाँ, पति से तो मेरा so-called प्रेम हो, जबकि है नहीं, पर बच्चों से बिल्कुल नहीं है।

तो बताइए loving relationship नहीं हैं अगर पूरी तरीके से तो कैसे हम संतुष्ट हो सकते हैं? वास्तव में हम यही चाहते हैं न अच्छे बच्चे हों, अच्छा पति हो, अच्छी सास हो, अच्छी मम्मी हो, अच्छे पापा हों, अच्छी भतीजी-भांजा, पता नहीं क्या-क्या, सारे अच्छे हों, perfection में हों। एक भी नहीं होगा तो हम दुःखी होंगे। हम वास्तव में

सब कोई वैकुण्ठ atmosphere ही चाहते हैं हर समय हम लोग। हर समय। हमें मालूम नहीं है, हमारी सारी desires anti-material हैं। सारी desires!

सारे सम्बन्ध जो हम चाहते हैं, यही चाहते हैं न, सारे सम्बन्ध ठीक हों। यह चाहते हो, 'मेरी बहन लड़ती रहे मेरे से? पापा ठीक हों, भाई ठीक है पर बहन लड़ती रहे?' न। वह बहन लड़ेगी आपका चैन खत्म, दुःखी एकदम। तो हम चाहते हैं सारे सम्बन्ध अच्छा होना। Loving relationship नहीं बोला मैंने, Loving relationships बोला है। सारे relations loving हों। इस कूड़े-कबाड़ा संसारे में तो नहीं होने वाले। All our desires are anti-material. कभी भी देख लीजिए। You know, we are always searching for a perfect relationship... वह मिल जाए मुझे। यह संसार में फिर वह भक्त के रूप में ही मिलेंगे आपको।

कई लोग बोलते हैं; इतना cheating है संसार में; कि "घर में साथ में बैठकर खाना खाओ तो प्रेम बढ़ता है।" सुना है आपने? प्रेम बढ़ता है? था कब प्रेम जो वह बढ़ेगा? कोई चीज़ होगी तो वह बढ़ेगी, यह तो समझ आती है। जब कोई चीज़ है ही नहीं कभी, थी ही नहीं कभी, हो ही नहीं सकती कभी, वह कैसे बढ़ सकती है? "प्रेम बढ़ता है।" प्रेम कैसे बढ़ेगा? Its unbelievable ! How people are, you know, cheating... उनको पता है सब पागल हैं किसी को पता तो चलता नहीं है।

कृष्ण देखना चाहते हैं कि how paintaking you are in Devotional service. How much pain you want to take in serving Devotees and others? This is what precisely Kṛṣṇa is eager to see... वे और कुछ नहीं देखना चाहते आपसे। आपका प्रचार नहीं चाहिए उनको और आपकी कोई भी चीज़ नहीं चाहिए। आप कितने eager हैं serve करने के लिए बस।

Love for living entities is actually Love of Kṛṣṇa for living entities..., you are just becoming a transparent via medium. Compassion of Kṛṣṇa, Love of Kṛṣṇa for living entities. Love of Kṛṣṇa, compassion of Kṛṣṇa for living entities and we can become a via medium.

"तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।।"

(गीता-११.३३)

निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्... हम यह देख सकते हैं जब भक्त इतने सुन्दर होते हैं, जब अनपेक्षा होते हैं, जब giving करते हैं, तो भगवान् कितने सुन्दर होंगे। जब भगवान् के भक्तों के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो सकता है तो भगवान् के साथ कितना मधुर सम्बन्ध होगा? सोच सकते हैं हम। हम क्यों यहीं पर संतुष्ट होना चाहते हैं? क्यों सस्ते में चाहते हैं यहाँ पर?

जब भी कोई लगे कोई मुझे प्यार करता है, स्पष्ट होना चाहिए, 'यह माया है।' भगवान् के शुद्ध भक्त और भगवान् को छोड़कर कोई किसी को प्यार नहीं करता। जब भी लगे कि यह व्यक्ति मुझे खुशी दे सकता है। इसका मतलब माया, सुस्पष्ट।

ठीक है अभी हम यहीं विराम देते हैं।